ग्यारहवाँ घंटा

जैक्स गोल्डस्टीन

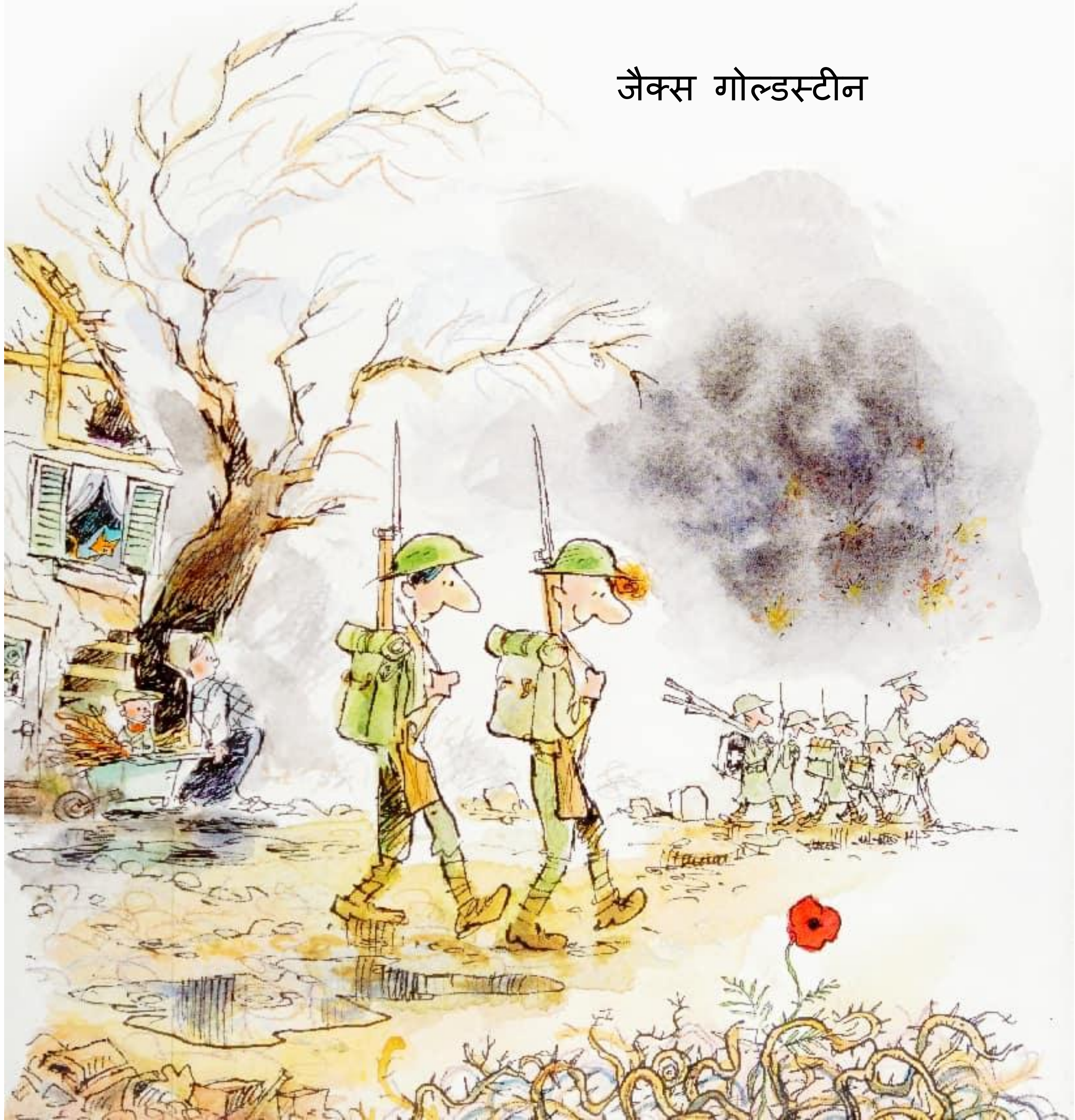

जूल्स और जिम सबसे अच्छे दोस्त हैं। वे साथ खेलते हैं। वे साथ स्कूल जाते हैं। वे साथ बड़े होते हैं। इन सबके बीच, जिम हमेशा जूल्स से थोड़ा आगे रहता है—थोड़ा तेज़, थोड़ा ताकतवर। इसलिए, जब 1914 में कनाडा जर्मनी के खिलाफ़ युद्ध में जाता है, तो जिम सबसे पहले फौज में भर्ती होता है, लेकिन जूल्स उसके ठीक पीछे होता है। वे साथ लड़ते हैं। वे अक्सर साथ में खाइयों में ठंड और कीचड़ को सहते हैं। लेकिन आखिर में, उनमें से सिर्फ़ एक ही ग्यारहवें महीने के ग्यारहवें दिन, ग्यारहवें घंटे में युद्धविराम को शुरू होते देख पाता है।
दिल को छू लेने वाली दोस्ती की एक नायाब कहानी, द इलेवन्थ आवर ज़िंदगी, मौत और युद्ध के डर और उसके बेफालतू होने की भी कहानी है।

ग्यारहवाँ घंटा

जैक्स गोल्डस्टीन

जूल्स और जिम का जन्म एक ही
दिन, एक ही शहर में हुआ था।

जिम पहले पैदा हुआ।
जूल्स उसके दो मिनट बाद आया।

जूल्स और जिम जल्द ही अच्छे दोस्त बन गए।

उन्हें एक ही जैसी चीजें पसंद थीं
और वे एक ही जैसे खेल, खेलते थे।

लेकिन जिम हमेशा आगे रहता था।
वह जूल्स से ज़्यादा तेज़ और ताकतवर था।

जूल्स, जिम का देखभाल करता था,
जिम, जूल्स का ख्याल रखता था।

सभी लोग इस बात पर सहमत थे कि
जिम और जूल्स की एक अजीब जोड़ी थी।

साल बीतते गए पर
कुछ भी नहीं बदला।

जूल्स हमेशा जिम से दो मिनट पीछे रहता
था, जिससे उसे बहुत परेशानी होती थी।

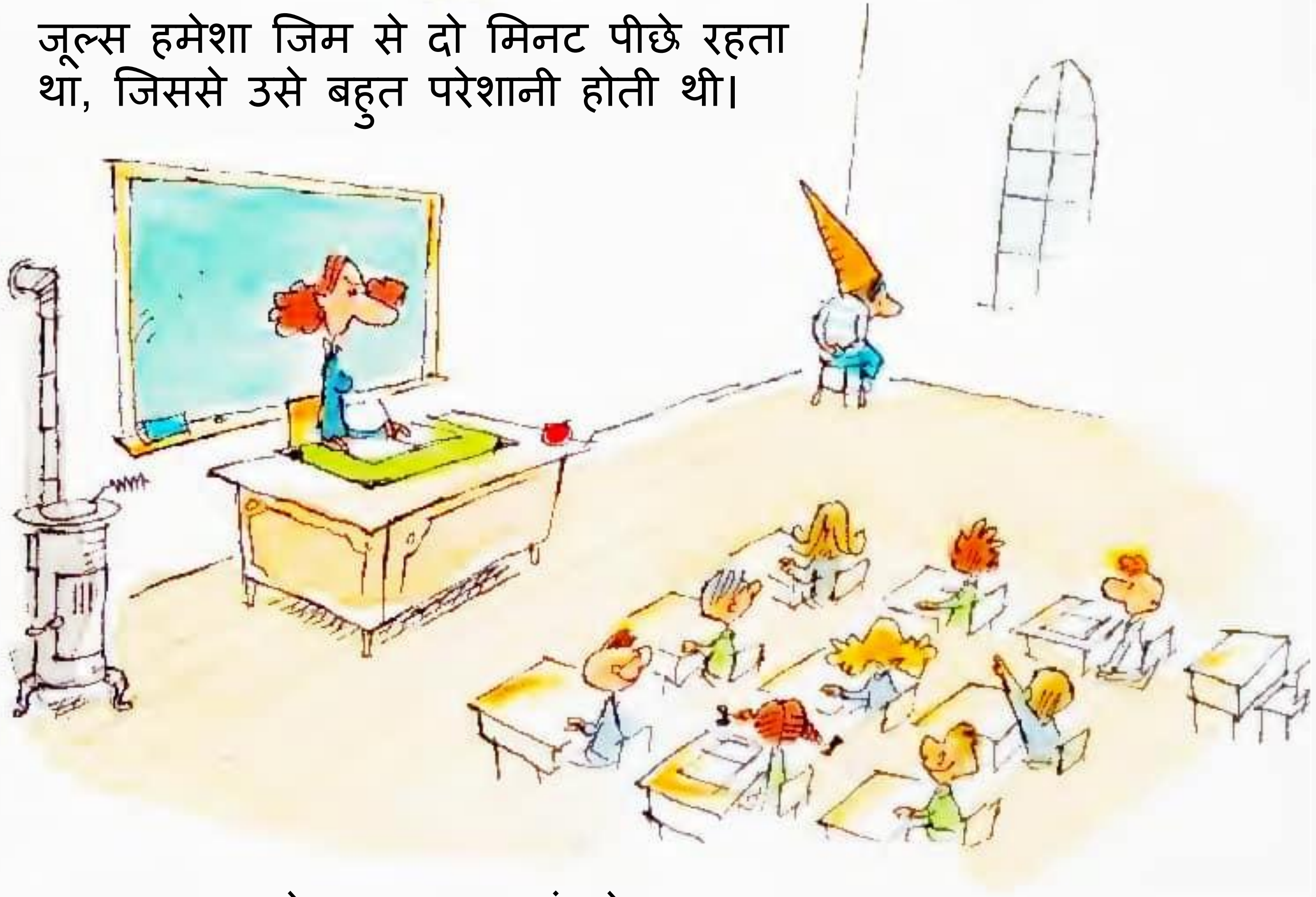

सब लोग जूल्स पर हंसते...
जिम को छोड़कर।

ज़िंदगी ऐसे ही चलती रह सकती थी,

लेकिन एक दिन, समुद्र के पार, यूरोप में कहीं युद्ध शुरू हो गया...

.. क्योंकि एक आर्चड्यूक और उनकी पत्नी की हत्या कर दी गई थी।

उससे यूरोप दो दुश्मन खेमों में बंट गया

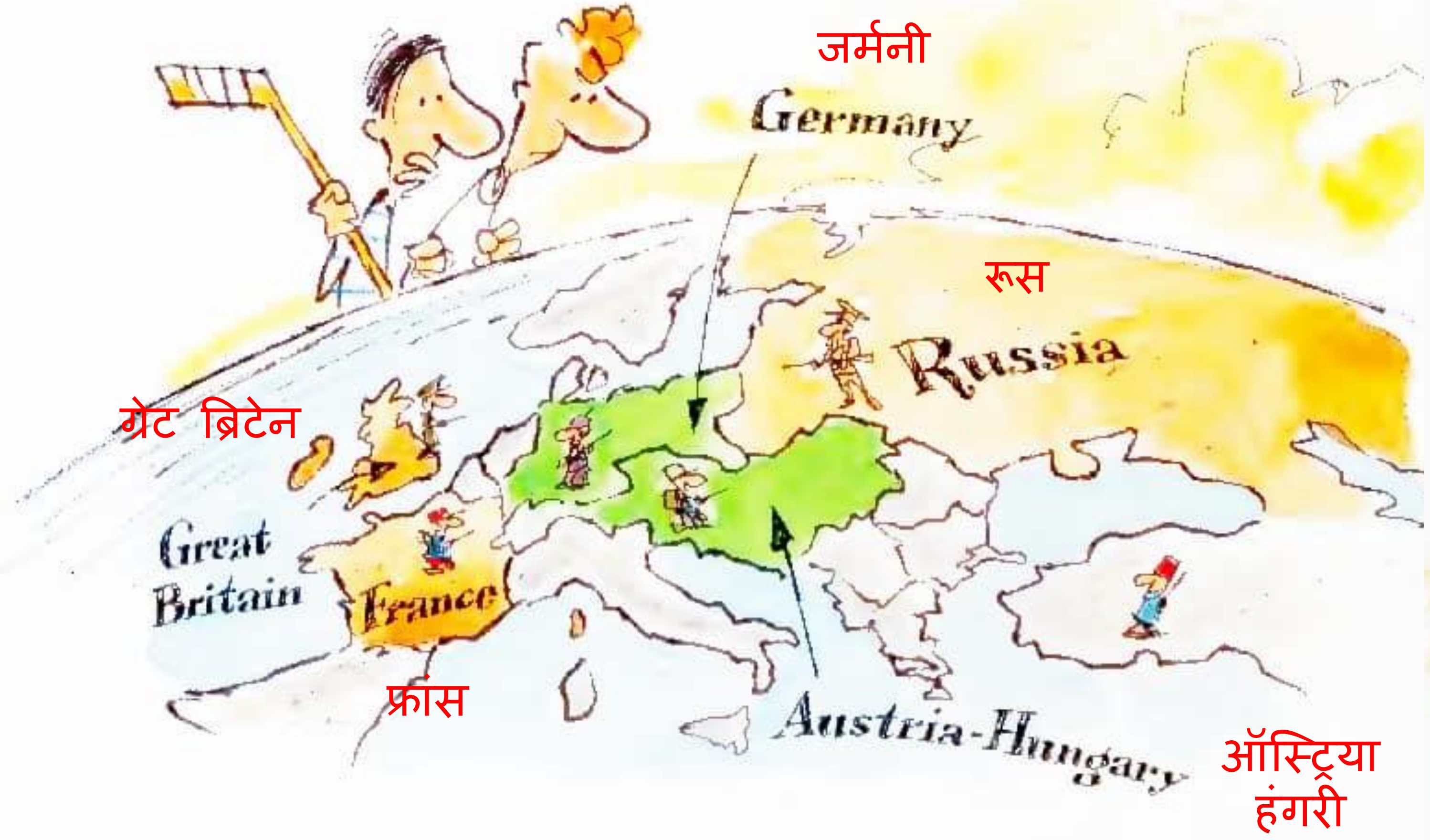

और फिर कनाडा,
जर्मनी के साथ
युद्ध में था।

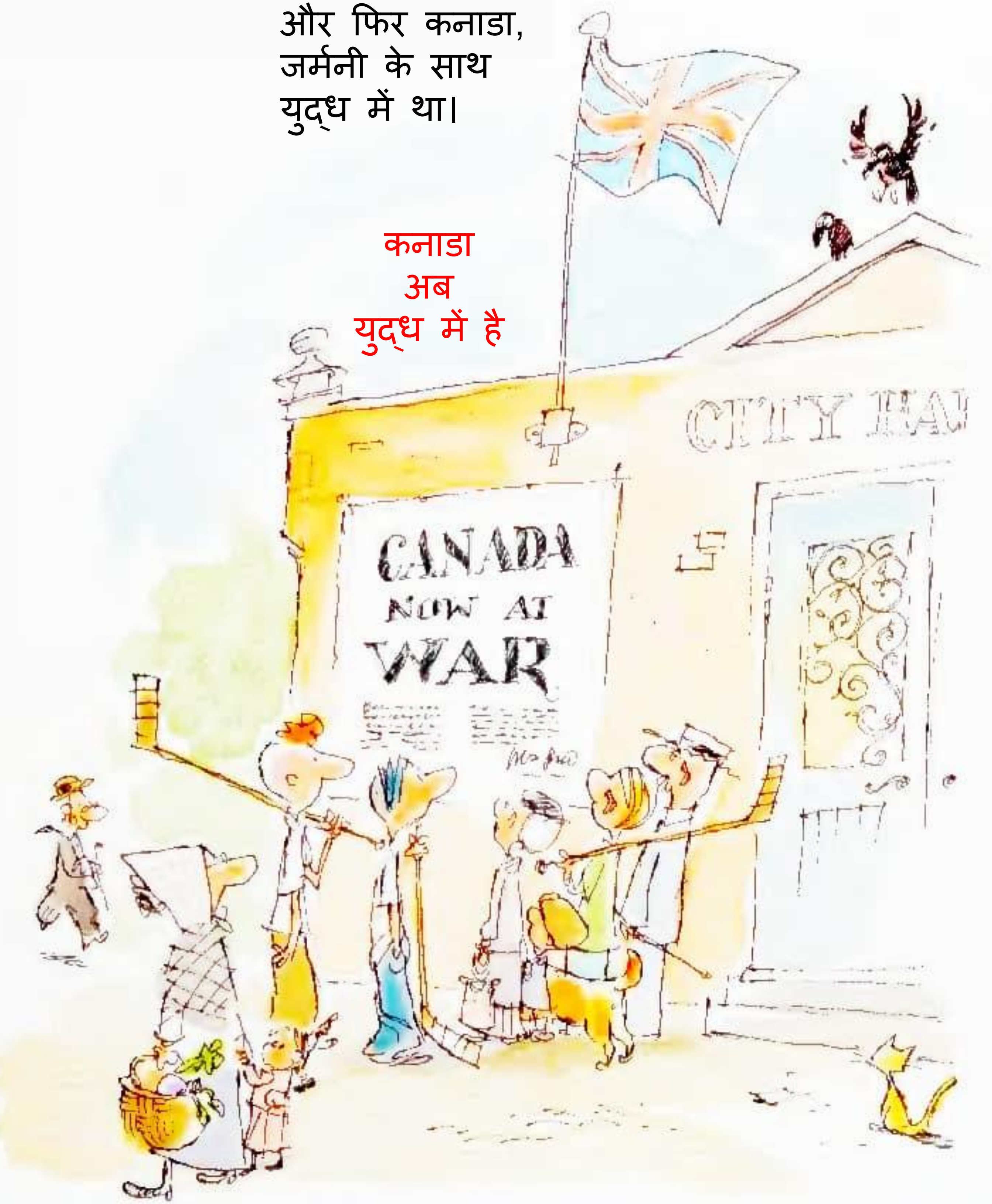

जूल्स और जिम को समझौतों और मित्र देशों के बारे में सभी बातें समझ नहीं आती थीं, लेकिन वे इतना जानते थे कि उनके देश को उनकी ज़रूरत थी। इसलिए, दोनों दोस्त फौज में भर्ती हो गए। अब उन्हें जर्मन राक्षसों को हराना था।

जिम अपनी वर्दी के लिए लाइन में सबसे पहले था।

उसकी यूनिफॉर्म उसे एकदम फिट आई।

जूल्स दो मिनट देरी से पहुंचा।

उसे बची हुई वर्दी ही मिली।

जूल्स और जिम को कड़ी ट्रेनिंग से गुज़रना पड़ा।

जूल्स को जल्द ही पता चल गया कि आदेशों का पालन करना होता है।

फिर, महीनों की ट्रेनिंग के बाद...

... वे यूरोप के लिए निकल पड़े।
जूल्स जहाज दो मिनट देरी से पहुँचा।

इंग्लैंड में और ट्रेनिंग लेने के बाद आखिरकार वे फ्रांस पहुंचे। वहाँ कनाडाई सैनिकों का ज़ोरदार स्वागत हुआ।

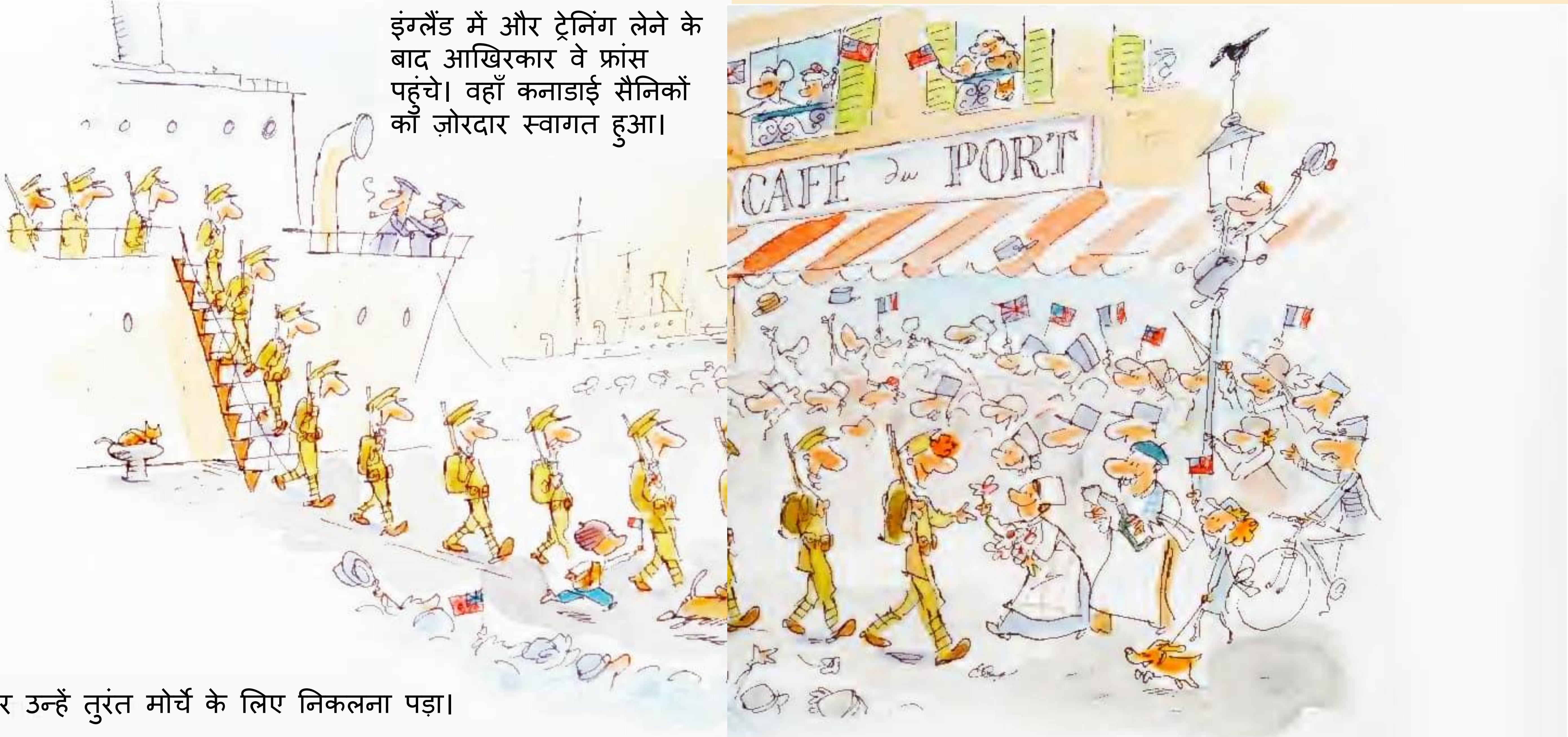

फिर उन्हें तुरंत मोर्चे के लिए निकलना पड़ा।

जूल्स और जिम ने सोचा - कि
युद्ध ज़बरदस्त लड़ाइयों और
शानदार हमलों से भरा होगा।

वे यह देखकर हैरान रह गए कि
इसके बजाए वहाँ पर कांटेदार तारों से
घिरी और कीचड़ से भरी खाइयां थीं।

तुरंत ही उन्होंने एक्शन देखा।
बड़े-बड़े तोप के गोले घंटों तक बारिश की तरह गिरते रहे।

फिर, कुछ देर शांति रहने के बाद, जर्मनों ने पैदल हमला किया। लेकिन कनाडाई सैनिकों ने अपनी मशीनगनों से उन्हें पीछे धकेल दिया।

फिर कनाडाई सैनिकों ने जर्मनों पर गोलाबारी शुरू की।

जल्द ही, जर्मन हमले का समय आया। सैनिकों को पता था कि दुश्मन की खाइयों की ओर भागना पागलपन होगा, लेकिन उन्हें आदेशों का पालन करना ही था।

हमले अक्सर नाकाम हो जाते थे, और जो सैनिक ज़िंदा बचते,
वे लड़खड़ाते हुए अपनी खाइयों में वापस चले जाते थे।

वे अगले हमले तक वहीं छिपे रहते, लेकिन
फिर सब कुछ दुबारा से शुरू हो जाता।

ऊपर और पीछे ... ऊपर और पीछे ..

कुछ खास पलों को छोड़कर

सैनिकों के पैर हमेशा गीले रहते थे,
उनके बाल जूँओं से भरे होते थे,
और खाइयाँ चूहों से भरी होती थीं।

जूल्स, चूहे पकड़ने में काफी माहिर हो गया।

सैनिक, गुफाओं में रहने वाले
आदिम इंसानों जैसे दिखने लगे।

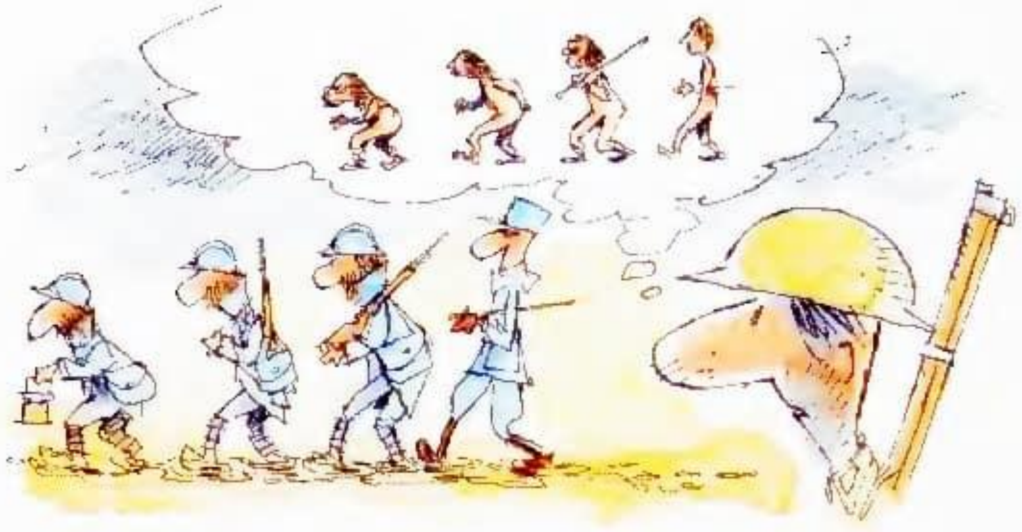

कभी-कभी वे जर्मन कैदियों को पकड़ लेते थे
और जूल्स और जिम तब हैरान होते क्योंकि,
जर्मन कैदी बिल्कुल भी राक्षस नहीं लगते थे।
उन्हें देखकर दया आती थी।

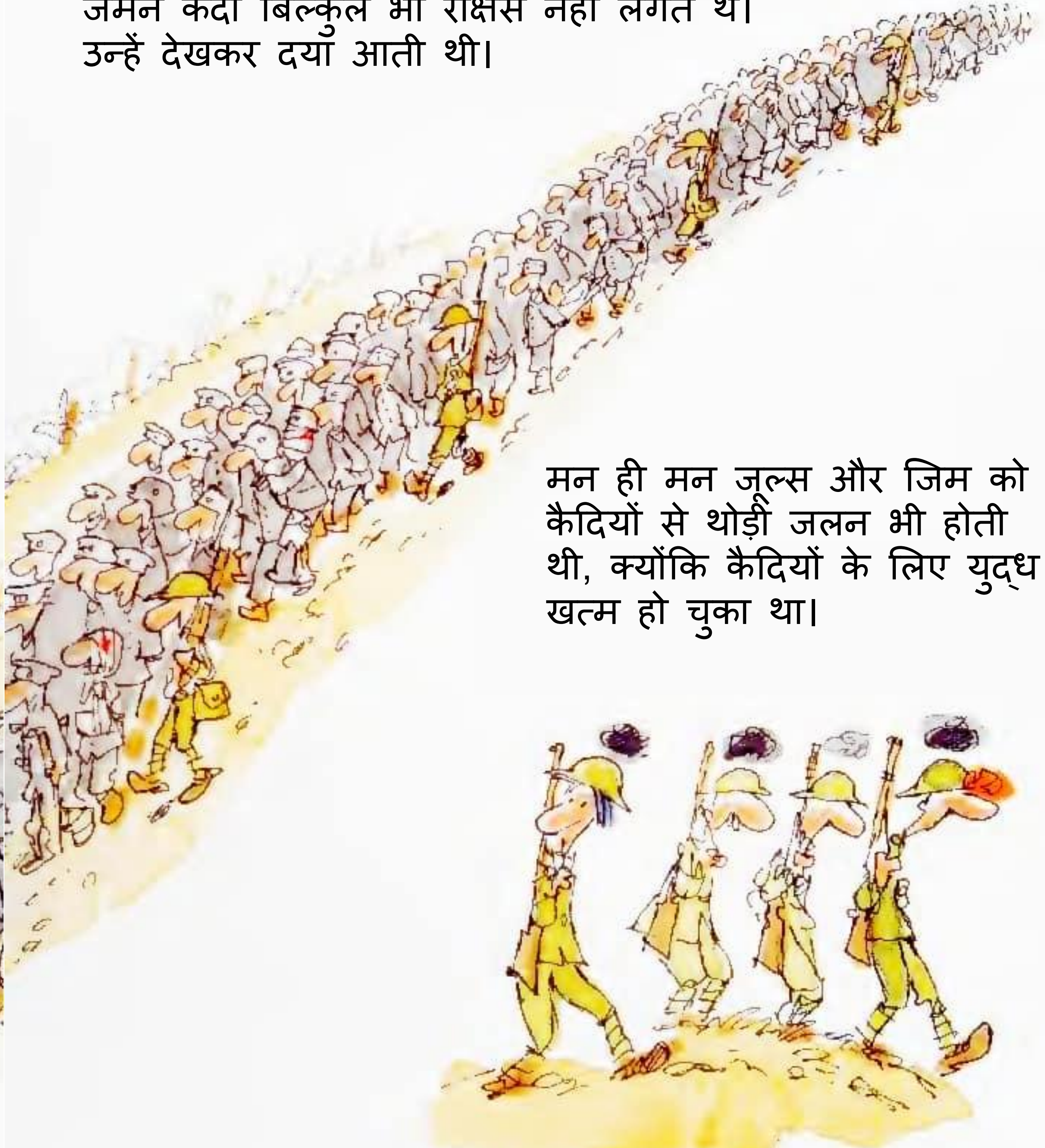

मन ही मन जूल्स और जिम को
कैदियों से थोड़ी जलन भी होती
थी, क्योंकि कैदियों के लिए युद्ध
खत्म हो चुका था।

लेकिन दोनों दोस्तों के लिए, कत्लेआम जारी रहा। धीरे-धीरे हथियार और भी ज़्यादा खतरनाक होते गए: फाइटर प्लेन, ज़हरीली गैस, टैंक...

युद्ध एक बड़े उबलते तेल की कढ़ाई की तरह था जो लोगों को निगलता जा रहा था।

जैसे-जैसे युद्ध लंबा खिंचा, मोर्चे से दूर की ज़िंदगी और भी मुश्किल होती गई।

कई नौकरियों में महिलाओं ने पुरुषों की जगह ले ली...

इसमें गोला-बारूद बनाने वाली फैक्ट्रियां भी शामिल थीं, जो चौबीसों घंटे खुली रहती थीं।

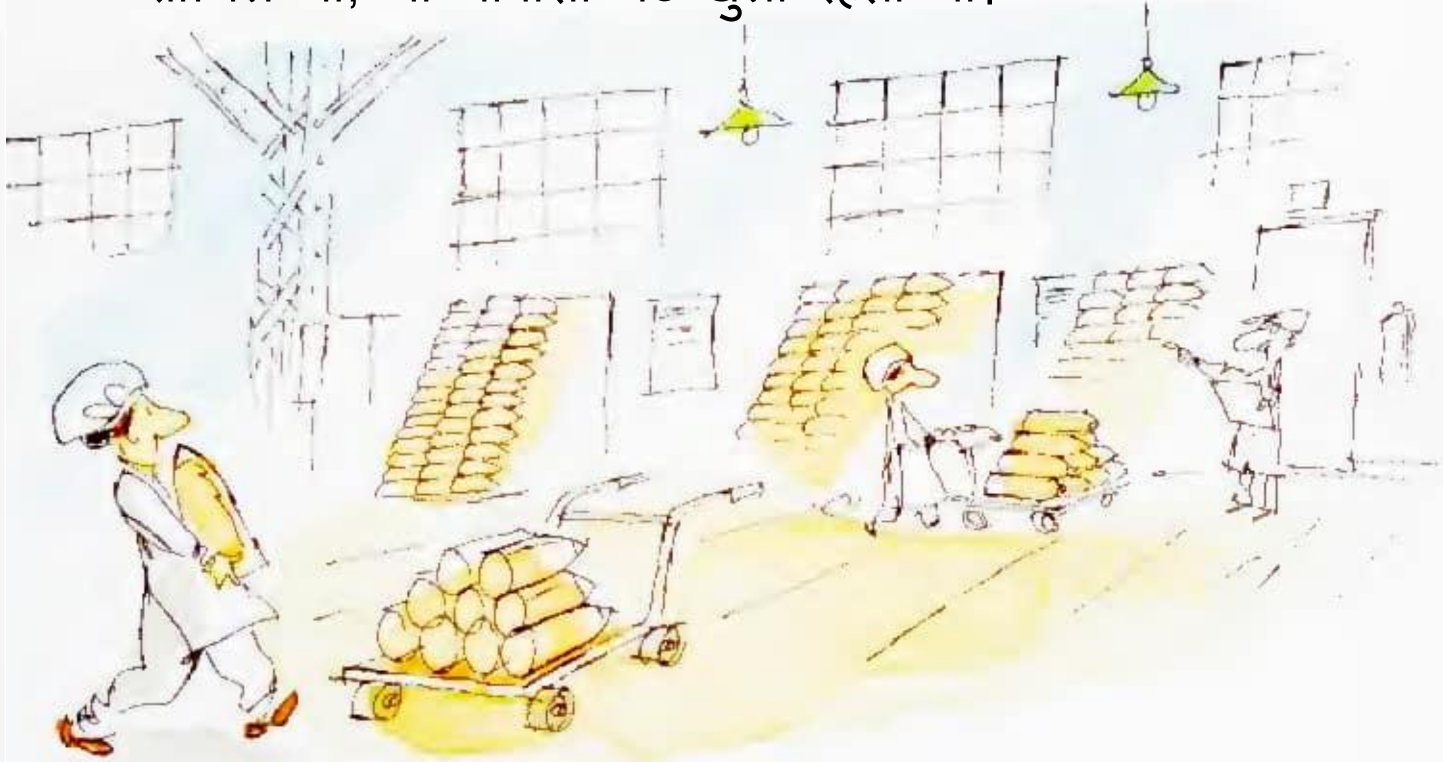

विस्फोटकों को संभालने से उनकी त्वचा पीली पड़ गई।

जिम सबसे आगे रहता, और हमेशा
सबसे पहले हमला करता था। जूल्स
हमेशा दो मिनट पीछे रहता था।

यही कारण था कि
जिम को सम्मानित
किया गया,

जबकि जूल्स,
आलू छीलने जैसे
कामों में फंसा रहा।

लेकिन अपने मेडल के बावजूद, जिम को भी डर लगता था। कभी-कभी रात में दोनों दोस्त एक-दूसरे को गले लगाते थे। कभी-कभी घर जाने की बात करते हुए वे रो पड़ते थे।

युद्ध बहुत लंबे समय तक चला।

दोनों तरफ के सैनिक पूरी तरह से थक गए।

उधर जर्मनी में भूखे नागरिकों ने
युद्ध के खिलाफ़ प्रदर्शन किया।

जर्मनी ने युद्ध रोकने का फैसला किया।

11 नवंबर 1918 को सुबह पांच बजे, मित्र देशों के नेता मोर्चे के पास एक खुली जगह में जर्मन नेताओं से मिले।

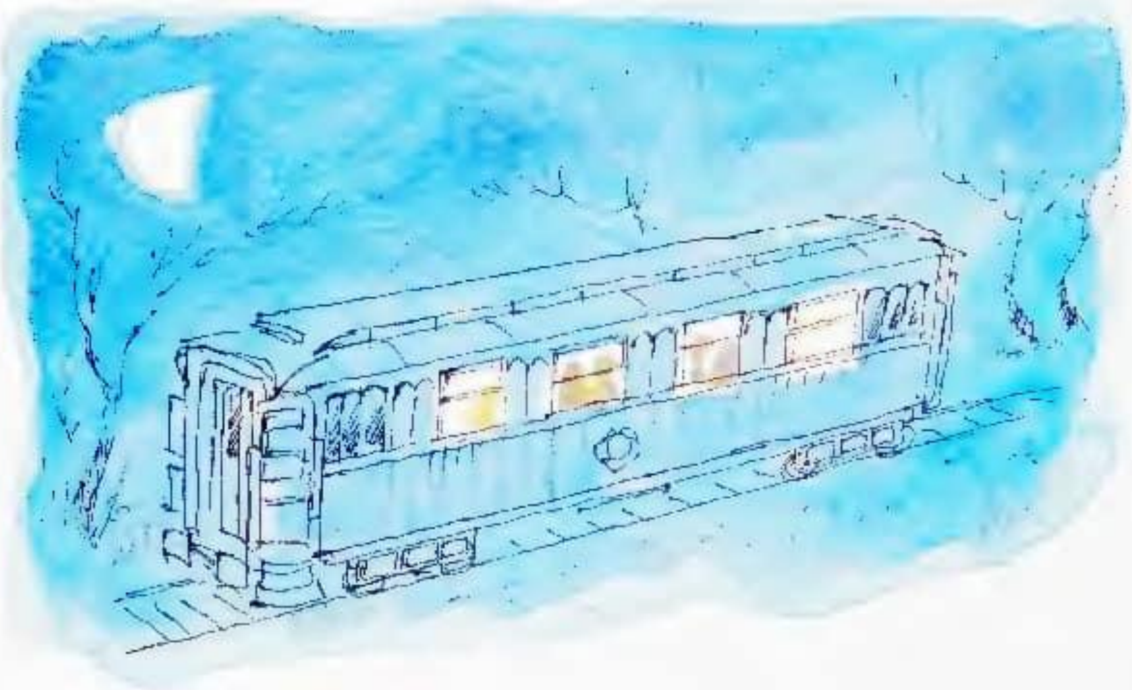

जहां उन्होंने युद्धविराम पर हस्ताक्षर किए।

लड़ाई तुरंत रुकनी थी, लेकिन उन्होंने सीज़फ़ायर शुरू करने के लिए ग्यारह बजे तक इंतज़ार करने का फ़ैसला किया, ताकि सैनिकों तक यह बात फैलने का समय मिल सके।

इसका मतलब था कि लड़ाई ग्यारहवें महीने के ग्यारहवें दिन, ग्यारहवें घंटे पर खत्म होगी।

भले ही युद्धविराम में कुछ ही घंटे बाकी बचे हों, लेकिन इस बीच, युद्ध के मैदान पर, लड़ाई ऐसे जारी रही जैसे कुछ बदला ही न हो।

युद्धविराम शुरू होने से कुछ ही देर पहले, जिम और जूल्स को हमला करने का आदेश मिला। हमेशा की तरह, जिम पहले आगे गया। जूल्स हमेशा की तरह समय से पीछे था और उसने जिम को गोली लगते हुए देखा।

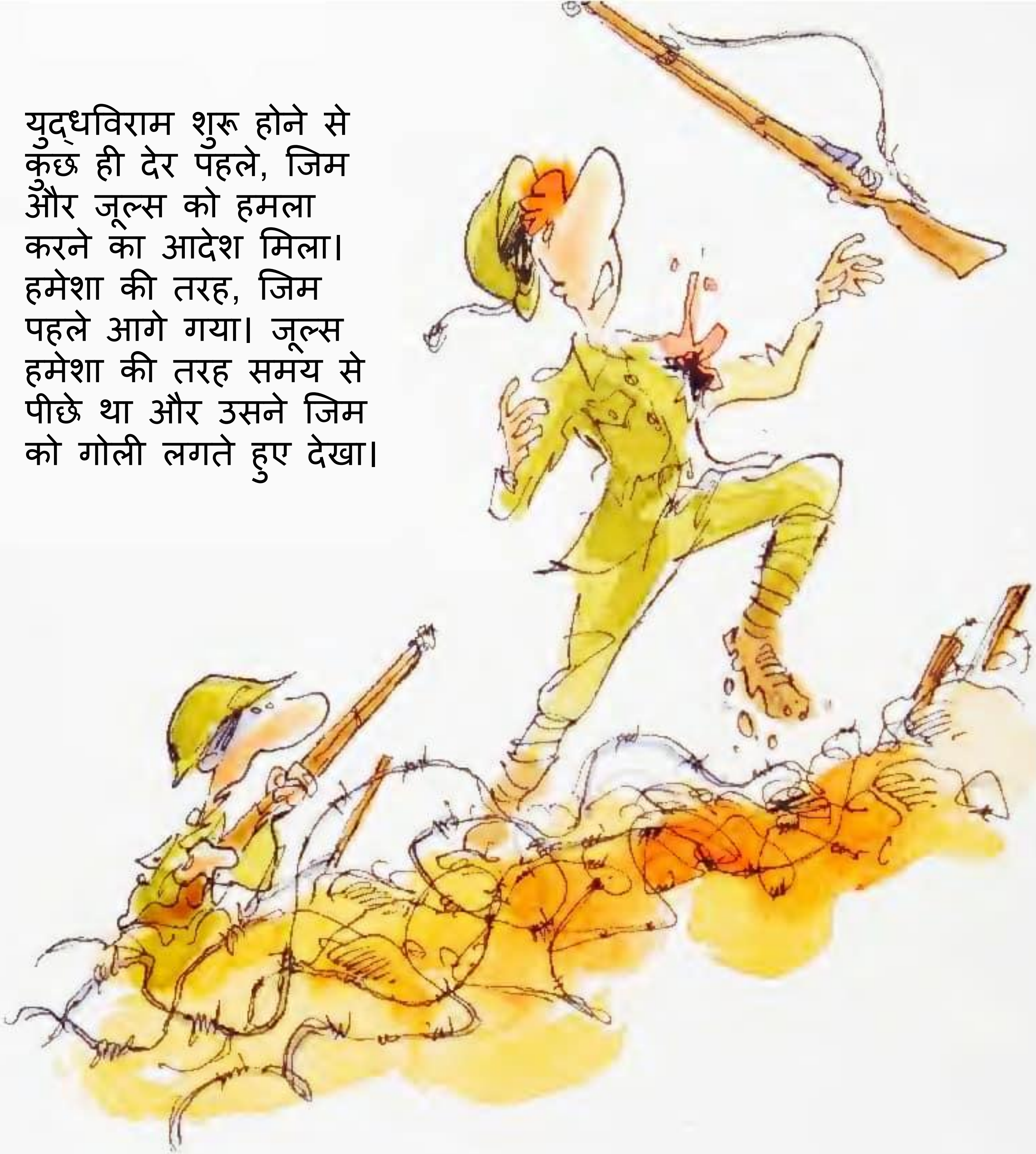

युद्ध खत्म होने में दो मिनट बाकी थे, यानी 10:58 बजे थे!

जूल्स ने जिम को बचाने की हरसंभव कोशिश की, लेकिन उसका दोस्त उसकी बाहों में ही मर गया।

इस तरह युद्ध का अंत हुआ...

...और इस तरह जिम का भी अंत हुआ।

जूल्स अपने दोस्त के बिना ही घर वापिस लौटा।

उसके लिए फिर से सामान्य ज़िंदगी जीना मुश्किल हुई।
वह जिम के बारे में सोचना बंद नहीं कर पाया।

उसके लिए आम ज़िंदगी में लौटना आसान नहीं था।

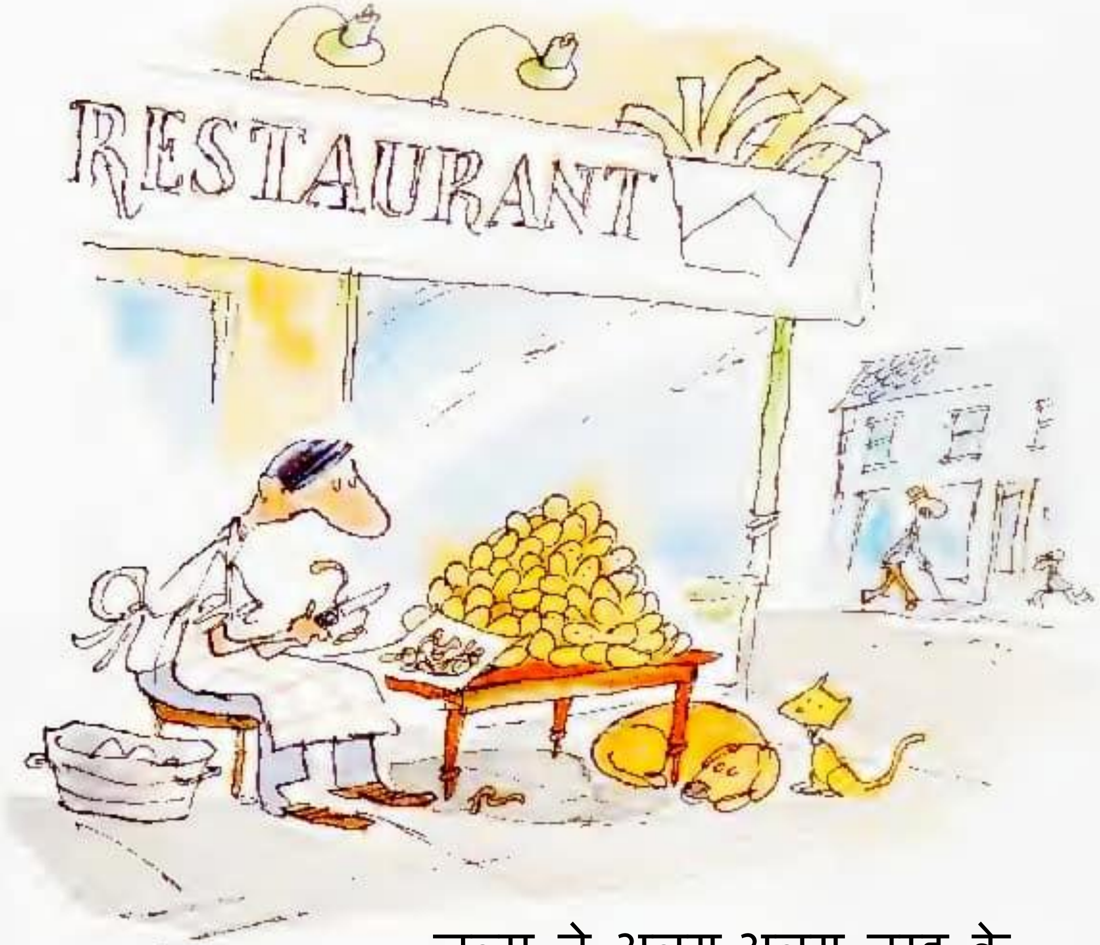

जूल्स ने अलग-अलग तरह के
काम और धंधे करने की कोशिश की।

आखिर में वह घड़ीसाज़ बन गया।

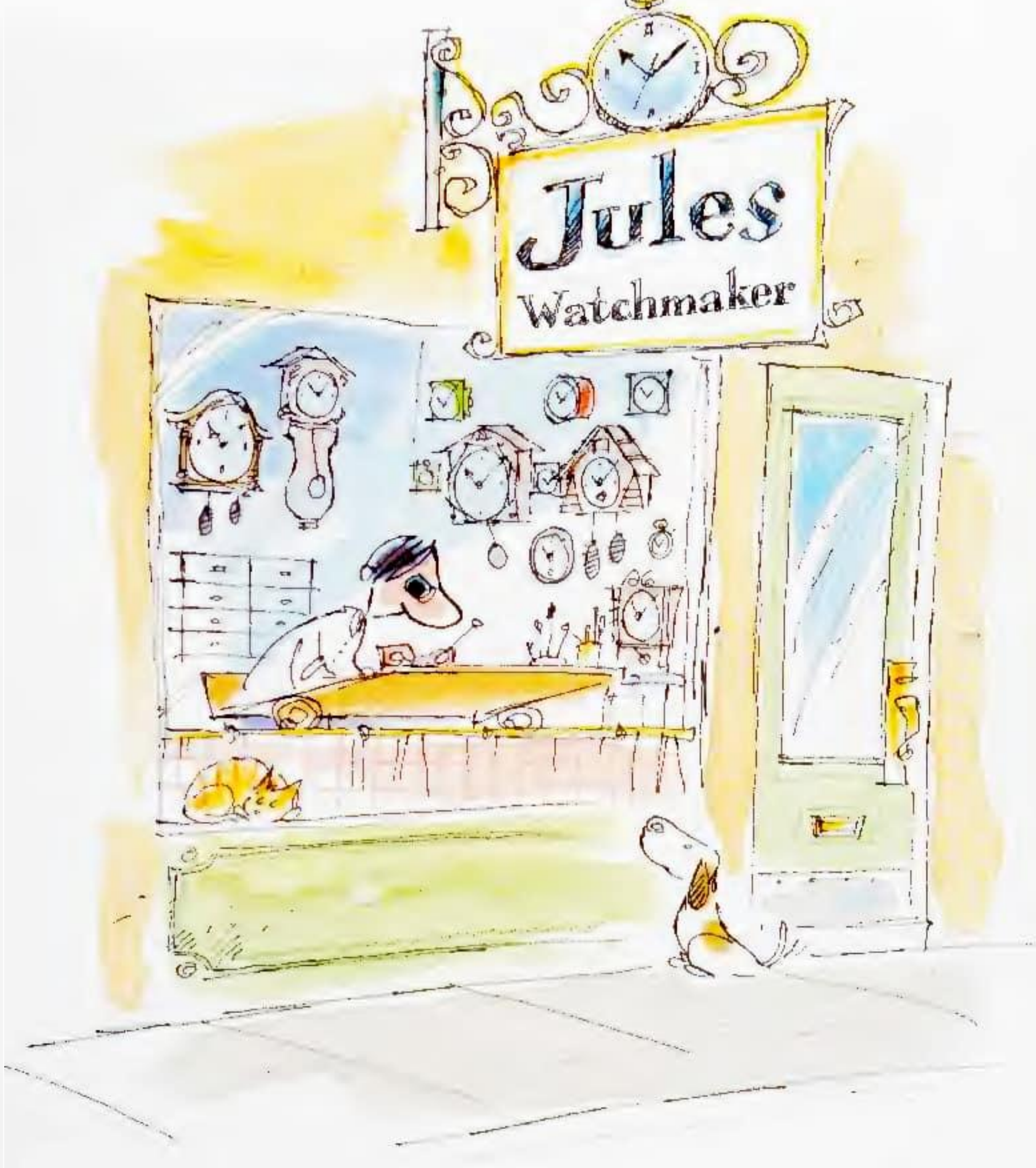

जूल्स की सभी घड़ियों में एक अजीब बात थी:
उसकी सभी घड़ियाँ दो मिनट धीरे चलती थीं।

Jules
Watchmaker

1914
1918

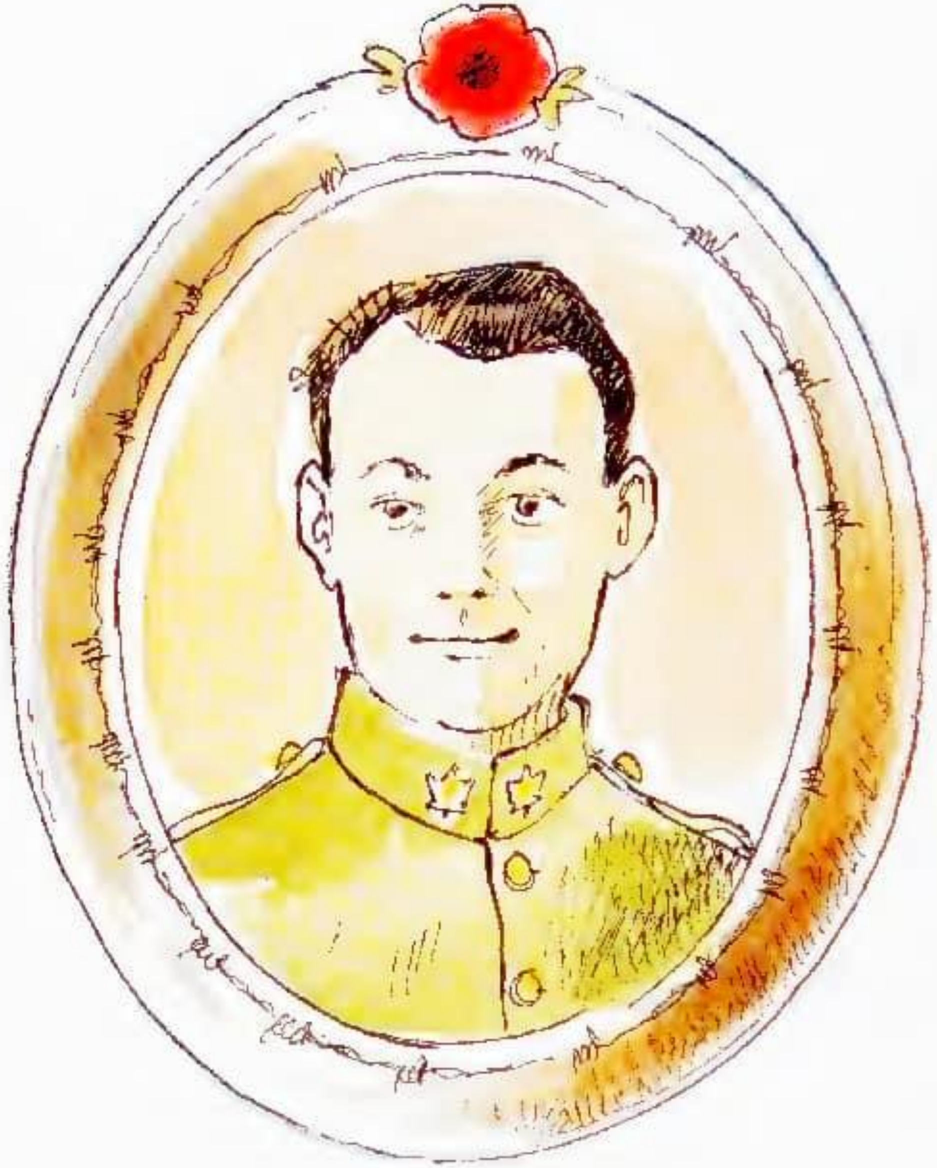

जॉर्ज लॉरेंस प्राइस की याद में, जो 11 नवंबर, 1918 को मरने वाला आखिरी कनाडाई सैनिक था। पहले विश्व युद्ध के खत्म होने से दो मिनट पहले, सुबह 10:58 बजे उसकी मौत हुई।

यह किताब मैं अपने दादाजी, मिशेल क्वेलेवर को समर्पित करता हूँ, जो एक किसान थे और वो ज़िंदगी और जानवरों से बहुत प्यार करते थे। वह अक्सर कहते कि वह “14-18 के पूरे युद्ध” से गुज़रे थे, जो फ्रांस में अक्सर पहले विश्व युद्ध के नाम से जाना जाता है। एक दिन, जब मेरी माँ आठ साल की थीं, तो उन्होंने अपने पिता से पूछा कि उन्होंने कितने जर्मन सैनिकों को मारा? मेरे दादाजी, जो आमतौर पर एक शरीफ़ आदमी थे, ने सख्ती से जवाब दिया: “मुझसे यह सवाल फिर कभी मत पूछना।” वह जानते थे कि वह खुशकिस्मत थे कि युद्ध में बिना घायल हुए बच निकले। हालाँकि, उन्हें कुछ चोटें जरूर आयीं।

मैं अपने दादाजी को और बेहतर जानना चाहता था, मैं उनसे बहुत सारे सवाल पूछना चाहता था,

जैक्स गोल्डस्टीन

जैक्स गोल्डस्टीन एक चित्रकार और पॉलिटिकल कार्टूनिस्ट हैं। वह बच्चों की मैगज़ीन *लेस डेब्रौइलार्ड्स में* लगातार लिखते हैं, और उनकी किताबों में *लेटर्स टू ए प्रिज़नर* और *बर्टोल्ट* शामिल हैं, दोनों को किर्कस रिव्यूज़ ने 2017 की सर्वश्रेष्ठ पिक्चर बुक्स माना गया। उन्होंने अपने इलस्ट्रेशंस के लिए दो बार इंडिपेंडेंट जर्नलिज़्म का ग्रैंड प्रिक्स जीता है, और वह मॉन्ट्रियल, क्यूबेक में रहते हैं।

जूल्स और जिम ने सोचा था कि युद्ध ज़बरदस्त लड़ाइयों और शानदार हमलों से भरा होगा। लेकिन वे इसके बजाय कांटेदार तारों से घिरी कीचड़ भरी खाइयों को देखकर हैरान रह गए।

$